बी० आर० अम्बेदकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

त्रिवर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम : भोजपुरी भाषा आसाहित्य

प्रथम खंड– दूसरका पत्र – भोजपुरी गद्यसाहित्य

सत्र–2020–2021 खातिर बहुविकल्पी प्रश्न के

नमूना

1. भोजपुरी में लिखल भोजपुरी के पहिल निबन्ध ह –
   (क) पानी (ख) मछरी
   (ग) गनेसी राम (घ) छठ महिमा
2. नवनिबन्ध भोजपुरी निबन्ध संग्रह के निबन्धकार हवें –
   (क) रामनगीना सिंह 'विकल' (ख) पाण्डेय कपिल
   (ग) एस०के० पाण्डेय (घ) निशांत
3. 'भोजपुरी निबन्ध संग्रह' नवनिबन्ध के प्रकाशक के नाम बा –
   (क) भोजपुरी संस्थान (ख) भोजपुरी परिषद्
   (ग) भोजपुरी अकादमी, पटना (घ) सेवाती
4. 'भोजपुरी निबन्ध संग्रह' नवनिबन्ध के प्रकाशन काल बा–
   (क) अगस्त, 1948 (ख) अगस्त, 1983
   (ग) अगस्त, 1883 (घ) अगस्त, 1950
5. 'मन' निबन्ध कवना निबन्ध संग्रह से लिहल गइल बा –
   (क) बातकबात (ख) लेखांजलि
   (ग) हमार गाँव हमार घर (घ) नवनिबन्ध
6. 'मन' के गति–बिधि जानेला –
   (क) तन (ख) धन
   (ग) जीवन (घ) खुद मन
7. ऋषि दण्डायन केकरा के मन के गति बताके सचेत कइले रहस –
   (क) सिकन्दर (ख) मुहम्मद गोरी
   (ग) दाहिर (घ) पोरस
8. मनुष्य का बन्धन आ मोक्ष के कारन ह–
   (क) इच्छा (ख) मन
   (ग) अहंकार (घ) लोभ

9. कवना चीज के आधार पर आदमी मामूली आ महापुरुष मानल जाला –

(क) धन के आधार पर (ख) लिवास के आधार पर

(ग) ज्ञान–अनुभव के आधार पर (घ) मौन रहला के आधार पर

10. कवना चीज के अभाव में ज्ञान–अनुभव ना हो सके –

(क) चेतना (ख) मन

(ग) अहंकार (घ) वेदना

11. सृष्टि के मूल कारन ह–

(क) सनातन (ख) चेतना

(ग) संशय (घ) मन

12. चेतना सक्रिय होके अपना कवना रूप के पहचानेला –

(क) पूर्ण अखंड ज्ञानानन्द के (ख) जीवनानंद के

(ग) संसार के (घ) देवलोक के

13. आदमी का आत्म साक्षात्कार हो सकेला –

(क) विषयन से मन के सटवला से (ख) विषयन से मन के पटवला से

(ग) विषयन के मन के हटवला से (घ) विषयन में मन के डूबवला से

14. 'मन के पवित्रता आ संतुलन के तत्त्व ह–

(क) देवत्व (ख) आर्यत्व

(ग) सत्त्व (घ) अमरत्व

15. 'मन के चंचलता' गति के तत्त्व ह –

(क) देवत्व (ख) आर्यत्व

(ग) सत्त्व (घ) अमरत्व

16. 'मन' का जड़ता या निष्क्रियता के तत्त्व ह–

(क) सत्त्व (ख) रज

(ग) तत्त्व (घ) हम

17. मन के तीन स्वर में चेतन, आ अवचेतन के अलावे होला –

(क) विचेतन (ख) नवचेतन

(ग) संचेतन (घ) अतिचेतन

18. चेतन स्तर पर मन के क्रिया सब मिलल होला –

(क) लोक के (ख) जीव से

(ग) अहंकार से (घ) संसार से

19. मन का कवना स्तर पर अहंकार अलोता में रहेला –

(क) चेतन (ख) अवचेतन

(ग) अतिचेतन (घ) संचेतन

20. अतिचेतन मन के स्तर ह–

(क) ऊपर के (ख) नीचे के

(ग) बीचे के (घ) शून्य के

21. अचेतन स्तर है–

(क) नीचे के (ख) ऊपर के

(ग) शून्य के (घ) मध्य के

22. मन कवना स्तर पर पहुँच के समाधिस्थ होला –

(क) चेतन के (ख) अचेतन के

(ग) अतिचेतन के (घ) नवचेतना के

23. अहंभाव से जुड़ल मन के वृत्ति के कहल जाला –

(क) अहंकार (ख) संस्कार

(ग) संस्कृति (घ) दुराचार

24. मन के निश्चयात्मक वृत्ति ह–

(क) बुद्धि (ख) चित

(ग) अहंकार (घ) विचार

25. मन के ऊ वृति जवन स्मरण से जुड़ल होला –

(क) अहंकार (ख) चित्त

(ग) बुद्धि (घ) मन

26. मन के निरूद्ध करे के प्रयास मन के कवन अवस्था है–

(क) एकाग्र (ख) क्षिप्त

(ग) मूढ़ (घ) विक्षिप्त

27. मन के कवन अवस्था समाधि में पहुँचावेला–

(क) एकाग्र (ख) निरूद्ध

(ग) मूढ़ (घ) विक्षिप्त

28. 'चित्त' निबन्ध में निबन्धकार कवना चीज के आखिरी पुरुषार्थ कहले बाड़न–

(क) अर्थ के (ख) काम के

(ग) धर्म के (घ) आत्मोपलब्धि के

29. मूल चेतना के निष्क्रिय अवस्था प्रलय हत सक्रिय अवस्था का ह–

(क) प्रलयांत (ख) मूढ़

(ग) सृष्टि (घ) विक्षिप्त

30. सृष्टि रचे खातिर ब्रह्म उत्पन्न कइले –

(क) माया (ख) छाया

(ग) काया (घ) संसार

31. 'लोक–परलोक' निबन्ध केकर ह–

(क) डॉ. विवेकी राय (ख) सिपाही सिंह श्रीमंत

(ग) रामनगीना सिंह विकल (घ) डॉ० प्रभुनाथ सिंह

32. 'लोक–परलोक' के निबंधकार आकाश के मनले बाड़न–

(क) ईथर (ख) सूथर

(ग) लूथर (घ) पानी

33. लोक कयगो मानल बा –

(क) एगो (ख) सात गो

(ग) नौ गो (घ) तीन गो

34. एगो 'लोक' के कयगो उपलोक होला–

(क) सात गो (ख) तीन गो

(ग) नौ गो (घ) चार गो

35. ठोस, तरल, वाष्पीय वगैरह भूगोल के कवन चीज मानल जालें–

(क) आधार (ख) उपलोक

(ग) जमीन (घ) पृथ्वी

36. सत्त्व–रज–तम गुनन के साम्यावस्था कवना लोक में भंग होला–

(क) परलोक में (ख) दानवलोक में

(ग) भूलोक में (घ) आदिलोक में

37. निष्क्रिय चेतना महाशक्ति के सक्रिय शक्ति के कहल जाला–

(क) चितिशक्ति (ख) अदितिशक्ति

(ग) दिति शक्ति (घ) भिति शक्ति

38. भौतिक शक्ति के आधार ह–

(क) निष्क्रिय चेतना (ख) अवचेतना

(ग) चितिशक्ति (घ) सुचेतना

39. भौतिक शक्ति के घनीभूत भइला से परमाणु भइले स आ परमाणुअन के मेल से बनल–

(क) रूपजगत (ख) अरूपजगत

(ग) दया (घ) स्वार्थ

40. मन खातिर सबसे कठिन काम का बा –

(क) चंचल भइल (ख) स्थिर भइल

(ग) गतिमान भइल (घ) विद्वान भइल

41. एंड गॉड सेड, देयर सुड बी लाइट एंड इट वाज लाइट' कहाँ के उक्ति ह–

(क) नव निबन्ध के (ख) अहंकार के

(ग) बाइबिल के (घ) स्मृति के

42. 'सृष्टि–क्रम' निबन्ध में जीवन के मूल मानल बा –

(क) ब्रह्म के (ख) माया के

(ग) जगत के (घ) लोक के

43. सक्रियता प्रकाश ह त निष्क्रियता का ह–

(क) आकाश (ख) धरती

(ग) अंधकार (घ) उजियार

44. एक के द्वारा अनेक हो जाए का इच्छा के कहल जाला–

(क) हिरण्यगर्भ (ख) जगत

(ग) चेतना (घ) वेदना

45. ध्वनि, आकर्षण, प्रकाश, ताप आ विद्युत कवना शक्ति के पाँचो प्रकार ह–

(क) देव शक्ति (ख) अदेव शक्ति

(ग) भौतिक शक्ति (घ) अभौतिक शक्ति

46. जवना अवस्था में भोग के सब विषय–ज्ञान स्थगित हो जालें, ओकरा के कहल जाला–

(क) अस्मिता समाधि (ख) दुविधा समाधि

(ग) विविधा समाधि (घ) व्याधि समाधि

47. चेतना महाशक्ति के निष्क्रिय अवस्था जबन अस्मिता समाधि के ऊपर होला, कहल जाला–

(क) अस्मितोत्तर समाधि (ख) तुतीया समाधि

(ग) शिव समाधि (घ) जीव समाधि

48. आध्यात्मिक साधन में मन के वृति के का कइल जाला–

(क) रोकल जाला (ख) धोंकल जाला

(ग) सेकल जाला (घ) सोंखल जाला

49. मन के तीर साधना के धनुष पर चढ़ा के तन्मय होके जब छोड़ल जाला त उहो पर ब्रह्म रूपी लक्ष्य के बेधेला।' कवना निबन्ध के सुक्ति ह–

(क) साधना (ख) व्यक्तित्व

(ग) लोकपरलोक (घ) अहंकार

50. 'मन के साधे सब सध सब साधे सब जाय।' लिहल बा –

(क) चित्त निबंध से (ख) बुद्धि से

(ग) साधना से (घ) व्यक्तित्व से

51. योग साधना से परमात्मा के पावे खातिर निबंधकार रामनगीना सिंह 'विकल' कवना सतगुरू से मिले के सलाह देले बाड़न।

(क) स्वामी हीरानन्द (ख) स्वामी मुक्तानंद परमहंस

(ग) बिरजानंद (घ) स्वामी देवानंद

52. निबंधकार विकल जी के अनुसार मन बुद्धि में समाहित हो जाला आ बुद्धि

(क) मान में (ख) सामान में

(ग) ज्ञान में (घ) विद्वान में

53. पं० रविदत्त शुक्ल के नाटक 'देवाक्षर चरित' कब प्रकाशित भइल रहे–

(क) सन् 1784 (ख) सन् 1884

(ग) सन् 1984 (घ) सन् 1934

54. सन् 1884 में छपल कवना हिन्दी नाटक के तिसरका आ चउथका अंक भोजपुरी में बा –

(क) नागरी विलाप (ख) जंगल में मंगल

(ग) देवाक्षर चरित (घ) सुदेसिया

55. 'नागरी विलाप' केकर लिखल नाटक ह–

(क) राम गरीब चौबे (ख) पं० रविदत्त शुक्ल

(ग) भिखारी ठाकुर (घ) सुकटी बाई

56. 'नइकी दुनिया' नाटक के नाटककार रहलें –

(क) भिखारी ठाकुर (ख) राहुल सांकृत्यायन

(ग) केदार पाण्डेय (घ) नन्द किशोर मनवाला

57. 'माटी के दीआ घीव के बाती' नाटक के नाटककार हवें –

(क) सतीश्वर सहाय वर्मा 'सतीश' (ख) डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

(ग) कुमार विरल (घ) डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव

58. 'माटी के दीआ घीव के बाती' नाटक के प्रकाशन भइल रहे –

(क) दिसम्बर 1971 ई. में (ख) दिसम्बर, 1981 ई. में

(ग) दिसम्बर, 1991 ई. में (घ) दिसम्बर, 1961 ई. में

59. गाँजा बोझल चीलम पर राखल भिजावल कपड़ा के कहल जाला –

(क) साफी (ख) गुदरा

(ग) भगई (घ) लगोंटा

60. गँजरी गाँजा पीअत कवना देवता के गोहरावे लन स –

(क) राम जी के (ख) भोला बाबा के

(ग) कृष्ण जी के (घ) काली माई के

61. राम सिंगार सिंह का छोट भाई के नाम ह –

(क) रामविरीक्ष (ख) शनिचर

(ग) धूरा (घ) बुझावनप

62. 'हमरा हाथ के रखिह पानी। जय हो जय हो भोला दानी।।' केकर कहल ह–

(क) शनिचरा के (ख) राम सिंगार सिंह के

(ग) रामबिरिछ के (घ) बुझावन के

63. 'केहू के सोझाई के एतना फायदा ना उठाबे के कि ओर घर दुआर में आगि लगा के अपने लोग हाथ सेंकी।' केकर कहल बा –

(क) राम बिरीछ के (ख) रामसिंगार के

(ग) बुझावन के (घ) धूरा के

64. 'ई चिलम अइसन ह कि देहे ना खाई–दिमागो जार–भून के राख कर दिही।' केकर कहल ह–

(क) भिखारी के (ख) पंडित के

(ग) राम बिरीक्ष के (घ) बुझावन के

65. राम सिंगार के पत्नी के नाम ह–

(क) फूलपति (ख) बासमती

(ग) धनिया (घ) लक्ष्मी

66. रामसिंगार के छोट भाई बाड़ें–

(क) राम बिरीछ (ख) रामदयाल

(ग) रामचंदर (घ) बुझावल

67. 'अगमजानी' के मतलब होला–

(क) अतीत के जाने वाला (ख) वर्त्तमान के जाने वाला

(ग) भविष्य के बात जाने वाला (घ) कवनो ना

68. 'रसाई ना बनल मनहुसी के लछन ह।' केकर बेयान ह–

(क) धरीछन के (ख) राम बिरीछ के

(ग) राम सिंगार के (घ) बासमती के

69. 'जब–जब हम रउरा के देखीला, त हम भूला लाइला कि हम के हईं? हम कहँवा बानी? ई केकर बेयान ह–

(क) बासमती के (ख) फुलपातो के

(ग) रामसिंगार के (घ) शनीचर के

70. 'आज देस के बचावे ला– हमनी के दू तरह के लड़ाई लड़े के बा। एगो सीमा पर। दोसर खेती पर।' केकर बेयान ह–

(क) राम बिरीछ के (ख) बिरीज के

(ग) माधो के (घ) खदेड़न के

71. 'कमर ओढ़ के घीव पीअब त लोग ना कही। जे पतल में खात बा उहे पत्तल में छेद करत बा' केकर बेयान ह–

(क) माधो के (ख) बिरीज के

(ग) खदेड़न के (घ) शनीचर के

72. 'बिना आगि के धुँआ ना होखे। बिना खर के आगि ना लागे।'– ई केकर बेयान ह–

(क) बिरीज के (ख) माधो के

(ग) शनिचर के (घ) रामसिंगार के

73. अनुरागी बाबा के प्रभाव में शनिचरा जय हो भोला बाबा के जगह का कहे लागल–

(क) हे राम (ख) जय भवानी

(ग) जय जवान जय किसान (घ) वंदे मातरम

74. 'आदमी के दिल मक्खन अइसन मुलायम होला। तनिको गर्मी पड़ल बस मोम के तरह पिघल गइल।' केकर कथन ह–

(क) अनुरागी बाबा (ख) तपेसर सिंह

(ग) समरथ गोसाई (घ) शनिचरा

75. घर छोड़ला के बाद रामबिरीछ कवना भूमिका में नजर आवत बाड़न–

(क) समरथ गोसाई (ख) अनुरागी बाबा

(ग) दरिया दास (घ) अनुराग स्वामी

76. घर छोड़ला के बाद बासमती कवना भूमिका में नजर आवत बाड़ी–

(क) जीविका दीदी (ख) अनुसेविका

(ग) हेथभिजिटर (घ) गृहणी

77. सेवक राय के ह–

(क) ग्राम सेवक (ख) ग्राम अधिकारी

(ग) डिपुटी मिनिस्टर (घ) दबंग

78. 'माधो भइया, जनमत के आगे लाठी आउर रुपया के शक्ति कवनो काम नाहीं करत।' केकर कथन ह–

(क) माधो सिंह (ख) राम सिंगार सिंह

(ग) अनुरागी बाबा (घ) बासमती

79. सन् 1956 ई. में छपल भोजपुरी के पहिल उपन्यास 'बिंदिया' के लेखक हउवें–

(क) विजेन्द्र अनिल (ख) रामनाथ पाण्डेय

(ग) महेन्दर मिसिर (घ) राजगुप्त

80. रामनगीना सिंह 'विकल' के कवन भोजपुरी उपन्यास सन् 1964 ई. में छपल रहे–

(क) जीअन साह (ख) सुभर काका

(ग) अछुत (घ) फुसरिया

81. सन् 1977 ई. में छपल 'फुलसुंघी' उपन्यास के लेखक हउवें –

(क) पाण्डेय सुरेन्द्र (ख) पी चन्द्र विनोद

(ग) पाण्डेय कपिल (घ) रामनाथ पांडेय

82. पाण्डेय कपिल 'फुलसुंघी' उपन्यास में कवना काल विशेष के तस्वीर उरेहले बाड़न–

(क) पौराणिक काल (ख) वैदिक काल

(ग) हाल काल (घ) अंगरेजी शासन काल

83. प्रयागराज के गायिका जानकी बाई कवना नाम से मशहूर रही–

(क) छप्पन छुरी (ख) ठेला बाई

(ग) फुलन बाई (घ) जिआ बाई

84. ठेला बाई के असली नाम रहे–

(क) केसर बाई (ख) विद्याधरी बाई

(ग) जानकी बाई (घ) गुलजारी बाई

85. गुलजारी बाई कवना उपन्यास के नायिका हई–

(क) महेन्दर मिसिर (ख) पूर्वी के घाट

(ग) फुलसुंघी (घ) कमली

86. फुलसुंघी उपन्यास के नायक बाबू हलिवन्त सहाय केकरा के आपन गुरु कहले बाड़न।

(क) रिवेल साहब (ख) रामनारायण मिसिर

(ग) महेन्दर मिसिर (घ) जटाधारी प्रसाद

87. फुलसुंघी उपन्यास के सहनायक हउवें–

(क) मोख्तार साहेब (ख) रिवेल साहब

(ग) हलिवंत सहल (घ) महेन्दर मिसिर

88. ''बाबू साहेब! फुलसुंघी के जानीले नू? ऊ पिंजड़ा में ना पोसा सके। ..... हम तबायफ के जात हई। हमरो काम फुलसुंघी लेखा एगो जेब के पइसा खींच के दोसरा जेब का ओर चल दिहल ह।'' ई केकर कथन ह–

(क) जानकी बाई के (ख) छप्पन छुरी के

(ग) ढेलाबाई के (घ) केसर बाई के

89. 'ढेला! फुलसुंघियों के हमरा सोना के पिंजड़ा में पोसाए के पड़ी, काहे कि हमरा जेब में पइसा के गंगाजी बहेली।'' केकर कथन ह–

(क) महेन्दर मिसिर (ख) बुलकना

(ग) रिवेल साहब (घ) हलिवंत सहाय

90. रिवेल साहब के मेम साहेब कवना रोग के शिकार हो गइल रहली–

(क) टी.बी. (ख) कालरा

(ग) प्लेग (घ) न्यूमोनिया

91. 'तू के हउअ भाई। कवनो देवदूत हउअ का?' केकर कथन ह–

(क) गुलजारी के (ख) रिवेल साहब के

(ग) ढेला के (घ) हलिवंत सहाय के

92. हलिवंत सहाय के बाबूजी के नाम रहे–

(क) बजरंग सहाय (ख) रघुवीर सहाय

(ग) मोहन सहाय (घ) देव सहाय

93. बजरंग सहाय ईस्ट इंडिया कंपनी का कवनो ऑफिस में कर्मचारी रहलें–

(क) शिक्षा विभाग में (ख) रक्षा विभाग में

(ग) वित्त विभाग में (घ) दिल्ली रेजिडेन्ट में

94. बजरंग सहाय के चाचा पंजाब में रहले–

(क) सर्वे ऑफिस के अमीन (ख) सर्वे ऑफिस के आदेशपाल

(ग) सर्वे ऑफिस के हाकिम (घ) सर्वे ऑफिस के कर्मचारी

95. हलिवंत सहाय बजरंग सहाय का कवना मेहरारू क संतान रहलें–

(क) पहिलकी (ख) तिसरकी

(ग) दूसरकी (घ) चउथकी

96. माई–बाप के मरला के बाद हलिवंत सहाय के पालन पोसन भइल–

(क) फूआ–फूफा के घर (ख) मामा–मामी के घर

(ग) पटिदार लोग के घर (घ) चाचा–चाची के पास

97. अफीम कोठी के नयका मुंशी हलिवंत सहाय के दरमाहा रहे–

(क) चार रूपया (ख) पाँच रूपया

(ग) तीन रूपिया (घ) आठ रूपिया

98. ''हलिवंत, हम तोहरा के पूरा अँगरेज बनाएब, आपन बेटा बना के इंग्लैंड लेके चल जाइब।'' ई केकर कथन ह–

(क) रिवेल साहब (ख) जंग बहादूर साहेब

(ग) इंग्लैंड साहब (घ) विलियम जोंस साहेब

99. हलिवंत सहाय के बियाह कहँवा भइल रहे–

(क) छपरा (ख) शीतलपुर

(ग) कांहीमिश्रुवलिया (घ) माँझी

100. रिवेल साहब हलिवंत सहाय के नाम छपरा के कोठी व जायदाद का रजिस्ट्री का दस्तावेज कवना खुशी में देले रहस–

(क) बेटा के खुशी में (ख) हलिवंत सहाय के कनिया के मुँह देखाई में
(ग) काम से खुश होके (घ) बुढ़ारी का चलते।

101. 'आदमी बड़ा छोट आ कमजोर जीव ह। ऊ त समय आ परिस्थिति ओकरा के बड़ बना देवेला।' – के कहल –
(क) रिवेल साहेब (ख) हलिवंत सहाय
(ग) महेन्दर मिसिर (घ) बजरंग सहाय

102. हलिवंत सहाय केतना उमिर में विधुर भइल रहस–
(क) चालिस बरिस में (ख) पैंतीस बरिस में
(ग) पचास बरिस में (घ) तीस बरिस में

103. पचपन बरिस का उमिर मे आके केकरा मन के दबल दबकल वासना उभार पर आ गइल रहे–
(क) छप्पन छुरी के (ख) हलिवंत सहाय के
(ग) महेन्दर मिसिर के (घ) ढेला के

104. 'बलुरेतवा पर बँगला छवा द, किसोर लाल, मारे लहर जमुना के।' कवना पाठ–पुस्तक से लिहल बा–
(क) माटी के दीआ घीव के बाती (ख) नव निबन्ध
(ग) फुलसुंघी (घ) जोंक नाटक

105. बस्ती के राय लछुमन प्रसाद कहँवा के डिस्ट्रिक्ट सब रजिस्ट्रार रहलें –
(क) बस्ती के (ख) आजमगढ़ के
(ग) छपरा के (घ) शीतलपुर के

106. राम लछुमन प्रसाद के बाप राय कामता नाथ प्रसाद का अंगरेजी सेवा में रहले–
(क) हवलदार (ख) मेजर
(ग) सुबेदार (घ) कर्नल

107. 'रजिस्ट्रार साहब । ..... ई त पिंजड़ाह, पिंजड़ा – सोना के पिंजड़ा, जबना में फुलसुंघी फंसाई।' क कहल–
(क) राय लछुमन प्रसाद (ख) हलिवंत सहाय
(ग) रिवेल साहब (घ) जानकी बाई

108. 'गुलजारी बाई केकरा बेटी के वियाह में मुजफ्फरपुर से छपरा आइल रही।
(क) सेठ जतन साह (ख) सेठ रतन साह

(ग) महेन्दर मिसिर (घ) सेठ मोहन साह

109. 'बिसरइहो जानि बालम हमार सुधिया।' गीत सेठ रतन साह का बेटी के वियाह में के गइले रहले–

(क) गुलजारी बाई (ख) केसर बाई

(ग) जानकी बाई (घ) हीरा बाई

110. गुलजारी बाई के माई रहली–

(क) जानकी बाई (ख) मीना बाई

(ग) हेला बाई (घ) विधाधरी बाई

111. गुलजारी बाई के तबलची रहले–

(क) टेका मियां (ख) रघुवर लाल

(ग) दुलार खाँ (घ) बिरीज साह

112. गँवई संकोच केकरा के खवासन का साथे बरामदा में बइठे ला मजबूर कइले रहे–

(क) हलिवंत सहाय के (ख) पलटुआ के

(ग) महेन्दर मिसिर के (घ) दुलार खाँ के

113. 'अब का रोवत बाडू मीना बाई? ढ़ेला बाई के मोह छोड़! .... उनकर अब दाम बोल।' के कहल–

(क) कोतवाल साहेब (ख) रजिस्ट्रार साहेब

(ग) सुबेदार साहेब (घ) हवलदार साहेब

114. ''दाम? कइसन दाम कोतवाल साहेब? हीरा–मोती आ जवाहरात के दाम होला। चन्दरमा के दाम ना होला।' – के कहल–

(क) गुलजारी बाई (ख) ढेला बाई

(ग) मीरा बाई (घ) जानकी माई

115. ''मीना बाई! रोज–रोज का जगहाँ तूँ, एके बेर अपना बेटी के दाम लेल।'' केकर बयान ह–

(क) हलिवंत सहाय के (ख) महेन्दर मिसिर के

(ग) गुलाब सिंह पहरेदार के (घ) दुलार खाँ के

116. 'हुजूर! हमरा बेटी के बेंचे के नइखे। .... हुजूर के खिदमत में गुलजारी हमरा ओर से तोहफा रहिंहे।' मीनाबाई ई केकरा से कहली–

(क) रिवेल साहेब (ख) महेन्दर मिसिर से

(ग) राम लछुमन प्रसाद से (घ) हलिवंत सहाय से

117. बजरंग सहाय केकर राज नीलाम कराके राज बचा लेले रहस–

(क) माँझी का बहुरिया के (ख) अमनौर का बहुरिया के

(ग) एकमा के राजा के (घ) मढ़ौरा का गढ़ के।

118. 'सराय का दरवान का' के ह ऽ । सवाल के जवाब नौजवान का देले रहे–

(क) लछुमन प्रसाद (ख) हलिवंत सहाय

(ग) महेन्दर मिसिर (घ) पलटुआ

119. महेन्दर मिसिर के गुरू पं० राम नारायण मिसिर के गाँव रहे–

(क) पकड़ी (ख) नवीगंज

(ग) रतनपुरा (घ) तेलुपा

120. 'कासी के लोग बड़ा बिसवासी नेहा लगाय दियो फाँसी, बोली बाले चिरइया बिरिजवासी।' पराती के गावत रहे–

(क) महेन्दर मिसिर (ख) गुलजारी बाई

(ख) पं० राम नारायण मिसिर (घ) जानकी बाई

121. गवैया नज्जू खाँ कहँवा से आके छपरा बस गइल रहल–

(क) पटना से (ख) टेरूआ से

(ग) कलकत्ता से (घ) लखनउ से

122. पं० रामनारायण मिसिर के दोस्त रहले–

(क) हलिवंत सहाय (ख) महेन्दर मिसिर

(ग) रिवेल साहब (घ) केहूना

123. मीना बाई मुजफ्फरपुर से रिवेलगंज केकरा बेटी का बियाह में नाचे आइल रही –

(क) सेठ रतन साह (ख) किसुन साह

(ग) हरिहर साह (घ) देक साह

124. 'हलिवंत सहाय केकरा से कहले रहस कि 'ब्राह्मण देवता! अगर जो इहे हाल रही त सुदामा लेखा दलिदर बन जाए के पड़ी।

(क) 'रामनारायण मिसिर से (ख) महेन्दर मिसिर से

(ग) विनय मिसिर से (घ) गुफर मिसिर से

125. पं० रामनारायण मिसिर के उस्तार रहलें–

(क) नज्जू खाँ (ख) विस्मिला खाँ

(ग) जीअन साह (घ) नेमत खाँ

126. 'रामनारायण! मरद आह ना भरेला। ऊ अपना पसन्द के चीज अपना बाँह का जोर से उठा लेवेला।' केकर कहलह–

(क) नज्जू खाँ के (ख) हलिवंत सहाय के

(ग) रिवेल साहेब के (घ) बजरंग सहाय के

127. बुलकना डोम कहाँ से आके बगींइचाँ में बसल रहे–

(क) दानापुर से (ख) आरा से

(ग) मनेर से (घ) पटना से

128. 'चीता के शिकार करे खातिर पालतू बनावल जाला, ई शिकारी जीव पालतू बन गइला पर, अपना मालिक खातिर शिकार करेला।' ई चीता शब्द से केकरा ओर संकेत कइल बा –

(क) बुलकना डोम खातिर (ख) पलटन खातिर

(ग) हीरा खातिर (घ) वैध खातिर

129. 'पलटुआ हलिवंत सहाय के के रहे–

(क) रिश्तेदार (ख) पड़ोसी

(ग) खास खवास (घ) केहू ना

130. गुलाब सिंह हलिवंत सहाय के के रहले–

(क) पहरेदार (ख) खास नोकर

(ग) टहलुआ (घ) खवास

131. हलिवन्त सहाय का उजरकी हवेली पर पंखा के डोरी कवन खींचत रहे–

(क) पलटुआ (ख) गुलाब सिंह

(ग) भगेलुआ (घ) धनेसरा

132. महेन्दर मिसिर हलिवंत सहाय का ललकी हवेली पर सबसे पहिले केकरा संगे आइल रहलें–

(क) पं० रामनारायण मिसिर (ख) विद्याधरी बाई

(ग) फागू तिवारी (घ) पलटुआ

133. हलिवंत साहब केकरा समाधि पर शराब ना पिये के प्रतिज्ञा लेले रहस

(क) पं० रामनारायण मिसिर (ख) रिवेल साहेब

(ग) बजरंग सहाय (घ) दामोदर राय

134. लाल कोठी पर 'फुलगेनवाँ ना मारो राजा ..... चोट।'' ठुमरी के गबले रहे–

(क) गुलजारी बाई (ख) जानकी बाई
(ग) विद्याधरी बाई (घ) केसर बाई

135. 'आरे विद्याधरी! ई लइकवा देहात स नू आइल बा। एह से तोहरो गवला का बाद ई गा ली ही। सुन त सही!' एह में लइकवा शब्द केकरा खातिर प्रयुक्त बा–
(क) हलिवंत सहाय (ख) महेन्दर मिसिर
(ग) भिखारी ठाकुर (घ) मास्टर अजीज

136. गुलजारी बाई आपन 'नथिया' तोहफा के रूप में केकरा के सउँपले रहली–
(क) हलिवंत सहाय (ख) लछुमन प्रसाद
(ग) महेन्दर मिसिर (घ) गुलाब सिंह

137. हलिवंत सहाय के बावर्ची रहले–
(क) पलटुआ (ख) युसुफ मियाँ
(ग) भगेलू (घ) धनेसर

138. गुलजारी बाई के लँउड़ी के नाम रहे–
(क) हिरिया (ख) जिरिया
(ग) सोनपरी (घ) सुकिया

139. हलिवंत सहाय के मनेजर मुंशी के नाम रहे–
(क) मुंशी शिवधारी लाल (ख) लछुमन प्रसाद
(ग) महेन्दर मिसिर (घ) पलटुआ

140. हलिवंत सहाय आपन लाल कोठी केकरा हिस्सा में दे दिहलें–
(क) महेन्दर मिसिर के (ख) पटी पटिदार के
(ग) लछुमन प्रसाद के (घ) गुलजारी बाई

141. 'ना मुंशी जी! रउआ नोकर हम मालिक ना! रउआ बाप, हम बेटी!'' ई बात केकरा से कहली गुलजारी बाई–
(क) मुंशी हीरालाल (ख) मुंशी शिवधारी लाल
(ग) लछुमन प्रसाद (घ) मुंशी जटाधारी प्रसाद

142. 'हूँह! मलकिनी! उहो पूजा पर! सत्तर–चूहा खाय के बिलाई भइली भगतिन।'' गुलजारी बाई खातिर ई केकर विचार ह–
(क) राय लछुमन प्रसाद (ख) मुंशी शिवधारी लाल
(ग) मुंशी बजरंग सहाय (घ) हलिवंत सहाय

143. हलिवंत सहाय के रिविलगंज चल गइला के बाद गुलजारी बाई के ललकी कोठी पर काहे खातिर बोलाबल गइलें महेन्दर मिसिर

(क) मुकदमा देखे खातिर (ख) भजन–कीर्तन जाने खातिर

(ग) धन के रक्षा खातिर (घ) गुलजारी बाई के मन लगावे खातिर

144. 'बनारस के संतोषी मंदिर के पास महेन्दर मिसिर के के भेंटाइल'।

(क) राजा साहेब (ख) विद्याधरी बाई

(ग) केसर बाई (घ) जानकी बाई

145. 'अपना एह द`ह के साथ हीं ठहरल बानी बाई जी!' केकर कथनह–

(क) महेन्दर मिसिर (ख) हलिवंत सहाय

(ग) लछुमन प्रसाद (घ) शिवधारी लाल

146. केसर बाई का केकरा से पराजित होखे के मलाल रहे?

(क) जानकी बाई (ख) तीजन बाई

(ग) ढेला बाई (घ) विद्याधरी बाई

147. केसर बाई का केकरा गला में अमरित होखे के एहसास भइल रहे–

(क) महेन्दर मिसिर (ख) राम नारायण मिश्र

(ग) रेवा मिसिर (घ) गुलजारी बाई

148. ''मिसिर जी! अपने अब बाब विश्वनाथ आ माता अन्नपूर्णा का एह नगरी में कहाँ जाएब! इहें रहीं आ हमरा के आपन चेलिन बना लीं।' केकर उद्‌गार ह?

(क) विद्याधरी बाई (ख) पूनम बाई

(ग) केसर बाई (घ) जानकी बाई

149. केसर बाई कवना घर पर रहत रहीं–

(क) लालकोठी पर (ख) उज्जरकी कोठी पर

(ग) दालमंडी वाला घर पर (घ) चेतगंज वाला कोठी पर

150. महेन्दर मिसिर का रहे के इंतजाम कहँवा करवली केसर बाई–

(क) चेतगंज वाला कोठी (ख) दालमंडी

(ग) शिव नगर (घ) बनदेवी वाला घर

151. केसर बाई के देख के महेन्दर मिसिर का आँखि में केकर रूप उतर जाए?

(क) जानकी बाई (ख) गुलजारी बाई

(ग) ढ़ेकन बाई (घ) विद्याधरी बाई

152. के अपना उमंग में दुनिया के कुछ ना बूझे। ऊँच नीच ओकरा कुछ ना बुझाला।

(क) मरद के (ख) मित्र के

(ग) पड़ोसी के (घ) औरत के

153. मुंशी शिवधारी लाल के असली नाम रहे–

(क) शंकर प्रसाद (ख) शिवजी

(ग) महेश्वर नाथ (घ) बटेसर लाल

154. मुंशी शिवधारी लाल के बेटा रहे–

(क) राम जी (ख) हरिहर प्रसाद

(ग) शिवरतन प्रसाद (घ) महेसर प्रसाद

155. शिवरतन प्रसाद केकरा के लेके कलकत्ता भाग गइले–

(क) गनेसिया (ख) महेसरी

(ग) गुलाबो (घ) जिरिया

156. केकरा के देख के शिवधारी लाल का अपना दुसरकी मेहरारू के मन पड़ जाए–

(क) जानकी बाई (ख) गुलजारी बाई

(ग) जिरिया (घ) केसर बाई

157. एगो रूपसी से दोसरा मरद के चर्चा सुन के सहल केकरा खातिर बड़ा दुखदाई रहे–

(क) लछुमन प्रसाद के (ख) महेन्दर मिसिर के

(ग) हलिवंत सहाय के (घ) पलटन के

158. केकरा भरोसा पर जीयत रहलें मुंशी शिवधारी लाल–

(क) पलटुआ (ख) बुलकना

(ग) शिवरतन प्रसाद (घ) रिवेल साहेब

159. केकर आँख कोठी, धन आ गुलजारी बाई पर लागल रहे–

(क) शिवधारी प्रसाद के (ख) रिवेल साहेब के

(ग) लछुमन प्रसाद के (घ) केहू के ना

160. कवना नीच पापी के मुँह ना देखे के चाहत रहली गुलजारी बाई

(क) महेन्दर मिसिर में (ख) लछुमन प्रसाद के

(ग) हलिवंत सहाय के (घ) राम नारायण मिसिर के

161. बाप के कजिया कके शिवरतन प्रसाद कहँवा लौट गइले–

(क) मुम्बई (ख) दिल्ली

(ग) बनारस (घ) कलकत्ता

162. हलिवंत सहाय का चचेरा भाई के नाम रहे–

(क) गुरूवचन सहाय (ख) शिववचन सहाय

(ग) रामप्रकाश (घ) घनस्याम

163. गुरूवचन सहाय कहँवा रहत रहलें–

(क) लौगोवाल में (ख) बंगाल में

(ग) गुजराँवाला पंजाब में (घ) खिलगंज में

164. रामप्रकाश हलिवंत सहाय के रहले–

(क) बेटा (ख) पोता

(ग) भतीजा (घ) भगिना

165. रामप्रकाश के पूरा परिवार कवनो महामारी में साफ हो गइल रहे–

(क) चेचक (ख) कोरोना

(ग) प्लेग (घ) हैजा

166. 'चूप रह हमार बाबू! हम तोहार छोटकी दादी हँईं। हम त बानीनू!' रामप्रकाश के के कहल–

(क) जानकी बाई (ख) गुलजारी बाई

(ग) केसर बाई (घ) केहू ना

167. राम प्रकाश का केकरा ढ़ाढ़स से बुझाइल जइसे डूबत के तिनका के सहारा मिल गइल–

(क) मीरा बाई के (ख) गुलजारी बाई

(ग) जानकी बाई (घ) केसर बाई

168. महेन्दर मिसिर हाबड़ा उतर के कहँवा कमरा ले लिहलें–

(क) सलकिमया के धर्मशाला में (ख) चौबीस परगना में

(ग) बैरकपुर में (घ) रिसड़ा में

169. महेन्दर मिसिर कलकत्ता के कवना कम्पनी में दरवानी के नौकरी कइलें–

(क) टाटा कम्पनी (ख) बिड़ला कम्पनी

(ग) हरिसन हेड कम्पनी (घ) घोषाल कम्पनी

170. हरिसन एंड कंपनी के ऑफिस कहँवा रहे–

(क) बहू बाजार (ख) वर बाजार

(ग) मीना बाजार (घ) मोतीझील

171. 'ल, पीय, दरद के दवाई! एहदुनिया में जदि जीये के चाहत होख त ई दवाई पियहीं के पड़ी।' महेन्दर मिसिर से के कहल–

(क) तीजन बाई (ख) ढेला बाई

(ग) मनोरमा (घ) जिरिया

172. बुलकना डोम कलकत्ता में कवना नाम से मसहूर रहे–

(क) बुलाकी लाल कायस्थ (ख) बुलाकी सिंह

(ग) बुलाकी प्रसाद (घ) बुलाकी

173. शिवरतन प्रसाद बैरकपुर के फौजी छावनी में का रहलें।

(क) सुबेदार (ख) सिपाही

(ग) किरानी (घ) कर्नल

174. 'बुलाकी लाल एंड कंपनी क भितरिया मनेजर के रहे–

(क) शिवरतन प्रसाद (ख) शिवलाल

(ग) पलटुआ (घ) मिसिर जी

175. 'बुलाकी लाल ऐंड कम्पनी' का नीचे का लिखल रहे–

(क) म्यूजिकल इन्स्ट्रूमेंट मरचेंट (ख) म्यूजिकल कम्पनी

(ग) बाजा छावन (घ) मरचेंट की दूकान

176. महेन्दर मिसिर का अंजान कलकत्ता में मुंशी शिवरतन प्रसाद के अलावे दोसर दोस्त के मिललें।

(क) बटेसर (ख) चनेसर

(ग) बुलाकी लाल कायथ (घ) वीरचन्द्र

177. काली माई के दरसन के बाद लवटत महेन्दर मिसिर का भिखइन रूप में के मिलल रहे–

(क) जिरिया (ख) गनेसिया

(ग) विद्याधरी बाई (घ) केसर बाई

178. केसर बाई कलकत्ता केकरा साथे आइल रहली–

(क) बनारस के राजा साहेब का साथे (ख) मुजफ्फरपुर का जमींदार का साथे

(ग) विद्याधरी बाई का साथे (घ) जानकी बाई का साथ

179. महेन्दर मिसिर के नोट छपे के सिखावे के के केहल–

(क) हलिवंत सहाय (ख) रिवेल साहेब

(ग) मुंशी शिवरतन प्रसाद (घ) केहूना

180. कलकत्ता में केकरा कमरा में नोट छापे के सिरी गनेस भइल–

(क) मनोरमा का (ख) शिवरतन प्रसाद का

(ग) बुलाकी प्रसाद कायथ का (घ) रखेलिन का

181. केसर बाई का केकर दवाई चलल रहे–

(क) रधिया के (ख) कविराज गणनाथ के

(ग) कविराज शिवनाथ के (घ) कविराज बैजनाथ के

182. ''मिसिर जी! अब उदास केकरा खातिर बानीं? पिछला जिनगी के छान्ह बान्ह काट के जे आगे बढ़त जाला ऊहे जीतेला।' ई केकर कहल ह–

(क) मनोरमा के (ख) केसर बाई के

(ग) ढ़ेला लाई के (घ) जानकी बाई के

183. शिव रतन प्रसाद श्याम बाजार में कवना नाम से नया फर्म चालू कइलें–

(क) मुंशी एंड सन्स (ख) लाल एंड कंपनी

(ग) शिव एण्ड संस (घ) फार्म हाउस

184. 'महेन्दर मिसिर मिश्रवलिया कलकत्ता से कतना दिन पर लबटल रहस–

(क) पाँच साल पर (ख) दस बरिस पर

(ग) चउदह बरिस पर (घ) पन्द्रह साल पर

185. मिसिर जी का हाथ में राकस के जटा अइसन कवन चीज मिलल रहे–

(क) नथिया (ख) नोट छापे के मशीन

(ग) लोटा (घ) औघड़ के आशीष

186. महेन्दर मिसिर कवना एजेंट से नोट भँजवावस–

(क) हरिलाल साह (ख) देवी दयाल पंडित

(ग) रामलाल सिंह (घ) गनेसी राम

187. एजेंट रामलाल सिंह महेन्दर मिसिर से कवना नया महाजन से मिलवलें–

(क) गोपीचन साह (ख) गोपीचन्द लाल

(ग) गोपीचन्द बड़ई (घ) गोपी चन्द महतो

188. गोपीचन्द साह कमीशन के रूप में कतना रूपया मँगलें–

(क) दस सैंकड़ा (ख) दू सैकड़ा

(ग) पाँच सैकड़ा (घ) पन्द्रह सैकड़ा

189. गोपीचन्द साह मिसिर जी खातिर मगही पान का संगे आकर का ले आवास?

(क) साग सब्जी (ख) दारू के बोतल

(ग) बनारसी सुर्ती (घ) शेरिया के खइनी

190. गोपीचन्द साह असल में के रहलें–

(क) मोख्तार साहेब (ख) रजिस्ट्रार साहेब

(ग) सी.आई.डी. दरोगा जटाधारी प्रसाद (घ) मजिस्ट्रेट साहेब

191. 'छोटकी दादी। ..... एगो महेन्दर मिसिर नाम के आदमी जाली नोट छापते में पकड़ा गइल बा।' ई बात गुलजारी बाई से के कहल–

(क) रमेश कुमार (ख) रामप्रकाश सहाय

(ग) शिवरतन (घ) जटाधारी

192. 'वकील साहेब! रउरा ठीक से मुकदमा के तइयारी करीं। जइसे होखे, महेन्दर मिसिर के छुटहीं के चाहीं। चाहे जेतना पइसा लागी, हम देब। हम सोना से तउल देव मिसिर जी के।' केकर बयान ह–

(क) गुलजारी बाई के (ख) जानकी बाई के

(ग) केसर बाई के (घ) जिरिया के

193. शीतलपुर छपरा के कवना थाना के गाँव ह–

(क) एकमा (ख) परसा

(ग) मसरख (घ) माँझी

194. राम प्रकाश सहाय केकरा के तुलसी अइसन पवितर आ गंगा जी अइसन निर्मल देखल रहलें–

(क) महेन्दर मिसिर के (ख) गुलजारी बाई के

(ग) रिवेल साहब के (घ) शिव रतन के

195. 'महेन्दर मिसिर! का तू जाली नोट छापत रहल ह?' के पुछल–

(क) वकील साहब (ख) दरोगा जी

(ग) जज साहेब (घ) रजिस्ट्रार साहेब

196. 'महन्दर मिसिर केकरा के देख के ठठा के हँसत गीत गवलें– 'पाकल पाकल पनवा खियवले गोपीचनवा।'

(क) जटाधारी प्रसाद के (ख) शिवरतन प्रसाद के

(ग) लछुमन प्रसाद के (घ) रिवेल साहेब के

197. राम प्रकाश सहाय केकरा मुँहे गावल सुनले– 'नोटवा के' छापी छापी मिनिया भँजवल हो महेन्दर मिसिर ...।

(क) गुलजारी बाई के (ख) रमा बाई के

(ग) जनपरी बाई के (घ) गोपीचनवा के

198. लछुमन प्रसाद का बेटी के का नाम रहे–

(क) गनेसिया (ख) सिया सहेली

(ग) राधा (घ) सीता

199. राम प्रकाश सहाय के बिआह केकरा बेटी स भइल–

(क) गुलजारी बाई के (ख) लछुमन प्रसाद के

(ग) बटेसर के (घ) केहु के ना

200. महफिल स घरे आके मीना बाई का करस

(क) अपना काम में लागस (ख) गुलजारी के देखभाल करस

(ग) फूट–फूट के रोअस (घ) गीत के रियाज करस।

201. 'हम जे उजरकी कोठी दखल क लेले बानी अब लौटा देने के चाहत बानी' के केकरा से कहल–

(क) लछुमन प्रसाद गुलजारी बाई से (ख) गुलजारी बाई लछुमन प्रसाद से

(ग) महेन्दर मिसिर केसर बाई से (घ) मीनाबाई हलिबंत सहाय से

202. मीना बाई कहँवा से मुजफ्फरपुर आइल रही

(क) सेना गाछी से (ख) कटरा से

(ग) लखनऊ से (घ) भगवान बाजार से

203. गुलजारी बाई के जनम कहँवा भइल रहे–

(क) मुजफ्फरपुर (ख) लखनऊ

(ग) कलकत्ता (घ) छपरा

204. गुलजारी बाई का अँगना में कवना फूल के पेड़ रहे–

(क) हरसिंगार (ख) कामिनी

(ग) चरण (घ) गुलाब

205. गुलजारी बाई के कवन बिमारी भइल रहे

(क) प्लेग (ख) हैजा

(ग) थायसिस (घ) टीवी